







इंकोरेसिस के सह-संस्थापक नारायण मूर्ति ने एक साल पहले यशांओं को हस्ते में 70 घंटे काम करने की सलाह दी थी और अब निमाण कंपनी लार्सन इंडिया (एल इंडिया) के अध्यक्ष एस. एन. सुभ्रमण्यम ने अपने कर्मचारियों से कहा है कि कामगारों को हप्ते में 90 घंटे काम करने को नीता रहना चाहिए। इनमें पर भी नहीं रु के, अगे कहा कि एक्स्ट्रा रिजिस्टर के लिए एक्स्ट्रा काम करना होगा और इसके लिए रिवार की भी काम करना चाहिए। अखिर, घर में रह कर मजदूर बोली का महं जरूर से काम करना यात्रा कहा है। अदानी एस्प के अध्यक्ष गौतम अदानी ने भी उनकी बातों का समर्पण करते हुए कहा कि अगर काम ही नहीं रहा तो बोली घर से भाग जाएगी और फिर क्या होगा? एल इंडिया के चेयरमैन के बयान के बाद देश में से मजदूरों के काम के घंटे बढ़ाने के लिए जब-तब सिंगापुर छोड़ा जाता रहा है। सच तो यह है कि पूरी बहस को इसलिए संचालित किया जा रहा है ताकि मंदी सकार द्वारा मार्च, 2025 में लाए जाने वाले लेवर कोड, जिसमें काम के घंटे 12 कर दिए जाने हैं, की सामाजिक स्तरीय हासिल की तरफ आवश्यक हो गई है। अपरीजी एस्प के चेयरमैन द्वारा गैंगनक ने एल इंडिया चेयरमैन के बयान की आलोचना करते हुए कहा, एक हप्ते में 90 घंटे काम? रिवार को %सन-इटी क्यों न कहा जाए और %छुटी को एक मिथकीय अवधारणा क्यों न बना दिया जाए! वर्क-लाइफ बैलेंस वैकल्पिक नहीं, बल्कि जरूरी है। यह भी सबाल उठाया जा रहा है कि जब भारत में पहले से

## संपादकीय

## बेरोजगारी और भी बढ़ेगी



एक युवान जैसे एआई इनोवेटर्स का मानना है कि एआई हर कंपनी के लिए चार दिन का कार्यसाह द्वारा शिखित करने की कुंजी होगा। उक्त अनुसार चार दिन के विकिंग में 92 प्रतिशत की सफलता दर है। जापान जैसे देशों में काम के घंटे लगातार कम किए जा रहे हैं। साउथ चाइना मार्निंग पोर्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार, जहां जापान में वर्ष 2000 में 1839 घंटे सालाना काम के थे वहीं उसे 2022 में घंटा कर 1629 घंटे सालाना काम कर दिया गया। इससे लगातार वार्षिक काम के घंटे में 11.6 प्रतिशत की गिरावट आई। बेल्टमैप, आइपलैंड, यूई, स्पेन और नीदरलैंड जैसे देशों में चार दिन के कार्य दिवस सप्ताह में काम दिए गए हैं। जापान की रिक्स्टर्ट वर्क-स्पैस डॉस्ट्रियूट के अनुसार, देश में अब कई योगीय देशों की तह काम के घंटे किए जा रहे हैं। अटोनीमी की एक रिपोर्ट के अनुसार, आइटफिशियल इंटेलिजेंस अनेक बाद बिट्टन में 88 प्रतिशत कंपनियां अपने कर्मचारियों के काम के घंटे 10 प्रतिशत तक कम कर रही हैं यानी कूल मिला कर कहा जाए तो दुनिया में काम के घंटे कम करने की दिशा में काम के घंटे बढ़ाने के कारण बेरोजगारी और भी बढ़ी, यह तथा है।

विदेश

ललित गर्ग

## भारत के लिये खतरा है पाक-बांग्लादेश की नजदीकियाँ



बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार प्रधानमंत्री शेख हसीना के अपदस्थ होने के बाद से लगातार भारत विरोधी गतिविधियों एवं कारगुजारियों एवं घटवंतों में सलाना के शह पर बांग्लादेश का भारत विरोधी रखाया बढ़ रहा है। बांग्लादेश में लगातार भारत विरोधी मुहिम व अल्पसंख्यक हिन्दुओं एवं हिन्दू धर्मस्थलों पर दिसक हमलों के बाद अब भारत सीमा पर बाड़बंदी को लेकर बेवजह की चाचा झड़ा किया जा रहा है। जबकि इस मुद्दे पर दोनों देशों की ओर जीवंत बनने के बाद बड़े दिसक पर बाड़बंदी हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार बैठे बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये किसी तीरों पर देश के बड़े दिसक बढ़ाने के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये किसी तीरों पर देश के बड़े दिसक बढ़ाने के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्गत्रव की कामना पर एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की एस्प एवं सहाई के लिये खड़ा हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार जीवंत बनाने के बाद बड़े दिसक बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्नानबद्द कर







